गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १०

तुम अपनी सत्ता को कैसे शुद्ध कर सकते हो? साधारण चीज़ों से शुरुआत करो। सबसे पहले, अपने कर्मों को शुद्ध करो। जब कोई विचार उपजे तो उसे क्रियान्वित करने से पहले, पल भर के लिए रुको। यदि वह पोषित करने वाला विचार नहीं है तो उसे वापस चिति में लय हो जाने दो। दूसरी बात, अशुद्ध कर्मों में अपनी झूठी आसक्ति को तोड़ दो। यदि एक मित्र तुम्हारे व्यवहार के विषय में कोई बात कहता है जो तुम्हें सुहाती नहीं तो तुरन्त ही उसे ठुकराओ नहीं। उसमें निहित भगवान की आवाज़ को सुनो। यदि तुम उस परामर्श विशेष को या आलोचना को या निर्देश को स्वीकार नहीं भी करना चाहते तो भी उसे दरकिनार न कर दो। उस पर चिन्तन करो। भगवान कितने ही मुखों के माध्यम से बोलते हैं। अन्त में, एक स्वस्थ अनुशासन का विकास करो। अपनी इन्द्रियों पर, अपनी आदतों पर, अपने संवेगों पर और अपने विचारों पर संयम रखने का अन्य कोई उपाय नहीं है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय २ “अस्तित्व की शुद्धि,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. २७।